Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi gen. 31

13.B.12

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.

Presented

by

Munshi Newul Kishore.

Hindi gen 31

13.B.12

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Bhāshā Laghuvyākaraṇa.

Bhasha Laghu Vyakaran

भाषालघुव्याकरण

प्रथम भाग

जिसको

अवध देशीय देहाती पाठशालाओं के विद्यार्थियों के लिये श्रीयुत महामहोपाध्याय त्रिपाठि पण्डित केशव-प्रसाद साहिब डिप्युटी इन्स्पेक्टर मदारिस ज़िलअ उन्नाम ने रिसालह क़वायद उर्दू के सारांश से देवनागरी भाषा में रचना किया

श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिम देशाधिकारी

श्रीयुत मन्वान लेफ़्टिनेण्ट गवर्नर बहादुर की

आज्ञानुसार

श्रीमद्विद्या सम्पन्न श्री साहिब डैरेक्टर वीरेश्वर आफ़ पब्लिक इन्स्ट्रक्शन् पश्चिमोत्तर व अवध देशीय की

अनुमति से

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेख़ाने में छपा

मार्च सन् १८८१ ई०

Bhāshā Laghuvyākaraṇa.

Bhasha Laghu Vyakaran

भाषालघुव्याकरण

प्रथम भाग

जिसको

अवध देशीय देहाती पाठशालाओं के विद्यार्थियों के लिये श्रीयुत महामहोपाध्याय त्रिपाठि पण्डित केशव-प्रसाद साहिब डिप्युटी इन्स्पेक्टर मदारिस ज़िलअ उन्नाम ने रिसालह क़वायद उर्दू के सारांश से देवनागरी भाषा में रचना किया

श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिम देशाधिकारी

श्रीयुत मन्यान्न लेफ़्टिनेण्ट गवर्नर बहादुर की

आज्ञानुसार

श्रीमद्विद्या सम्पन्न श्री साहिब डैरेक्टर वीरेश्वर आफ़ पब्लिक इन्स्ट्रक्शन् पश्चिमोत्तर व अवध देशीय की

अनुमति से

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेख़ाने में छपा

मार्च सन् १८८१ ई०

श्रीगणेशायनमः ॥

भाषालघुव्याकरण ॥

प्रथम भाग

शब्द बिचार(सर्फ़)वह भाग है कि जिससे एक शब्दका दूसरे शब्दसे बनाना और साधन (तब्दील लहोना) मालूम हो और ग़र्ज़ उससे यह है कि बक्ता (मुतकल्लिम) सही लफ़्ज़ बोले और लिखे ॥

शब्द (लफ़ज़) वह है जो आवाज़ इन्सान के मुंहसे निकलती है अगर वह मानेदार है तो उसे लफ़्ज़ मौज़ूअ उर्दू में कहते हैं जैसे-क़लम॥

अगर निरर्थक (बेमानी) है तो उसे लफ़्ज़ (मोहमल)कहते हैं जैसे-दैज़कि ज़ैद को उलट कर कहो यह लफ़्ज़ बेमानी और मोहमल है॥

शब्दके दो भेद हैं सिद्ध (मुफ़रद) औरसाधित (मुरक्कब) ॥

सिद्ध (मुफ़रद) वह लफ़्ज़ है कि किसीदूसरे लफ़्ज़ से मिलकर न बना हो जैसे-ज़ैद-घोड़ा-बैल-साधित (मुरक्कब) वह लफ़्ज़ है जो दो या अधिक शब्दों से बनाया गया हो जैसे-बावरची ख़ानह-लालहरूख़ ॥

शब्दों का सम्बन्ध (अक़साम कलमा)
शब्दों की पांच क़िस्में हैं

संज्ञा१ (इस्म) विशेषण२ (सिफ़त) सर्वनाम ३ (ज़मीर) क्रियापद ४ (फ़ेल) अव्यय ५ (हर्फ़) संज्ञा (इस्म) वह है कि नाम हो मनुष्य या जगह या कैफ़ियत या पदार्थ का जैसे-ज़ैद-लखनऊ लड़ाई-मिठास ॥

नाम बिचार
(अक़सामइस्म)

संज्ञा (इस्म) के दो भेद हैं विशेष नाम (इस्म ख़ास) सामान्य नाम (इस्म आम) विशेष नाम (इस्मख़ास) वह है कि जिस नाम से केवल एक ख़ास नाम का बोध हो जैसे-इब्राहीम-कलकत्ता गणेश-गङ्गा-सामान्य नाम (इस्सआम) वहहै कि जिसके कहने से एक जाति में से कोई एकजाना जाय यथा-देव, घोड़ा, हाथी, मनुष्य इत्यादिइसी को उर्दू में इस्म जिन्स और इस्म कुल्ली भी कहते हैं ॥

लिंग बिचार

लिङ्ग से नर और मादह पहचाने जाते हैं और उसके दो भेद हैं पुल्लिङ्ग (मुज़क्कर) स्त्रीलिङ्ग (मुवन्नस) पुल्लिङ्ग (मुज़क्कर) नर को कहते हैं चाहे वह सजीव हो या निर्जीव-बहुधा पुल्लिङ्गके अंत में अ। या ह० चिन्ह होता है-जैसे-लड़का, बंदह

परदह, लोटा, स्त्रीलिङ्ग (मुवन्नस) मादह को कहते हैं चाहे वह सजीव हो या निर्जीव-जैसे लड़की, कुर्सी, मुहब्बत, कसरत, बनावट, करवट, रोटी, टोपी, सज़ा ॥

जिस रूप से एक समझा जाय वह एकबचन (वाहिद) जैसे - मर्द - घोड़ा - प्याला - जिसरूप से एक से अधिक का बोध हो वह बहुबचन (जमअ़) है यथा- औरतें-लड़के- प्याले-कुर्सियां ॥

बिशेषण (सिफ़त)

बिशेषण (सिफ़त) के तीन दर्जे हैं गुणबाचक (सिफ़तमहज़) आधिक्य बाचक (तफ़ज़ीलबाज़) और अत्युक्तिबाचक (तफ़ज़ीलकुल) ॥

गुणबाचक वह है जिनसे गुण पाया जावै जैसे-अच्छा-बुरा-इत्यादि ॥

आधिक्य बाचक वह है कि जिसके कहने से ज़ियादती गुण की दूसरे से पाई जावे हिन्दी में उसके लिये बहुत का शब्द लाते हैं और उर्दू में ज़ियादह और फारसी संस्कृत में तर- यथा बहुतअच्छा- खुशतर- सुष्टुतर- खजूर के दरख़्त से नारियल का दरख़्त ऊंचा है यानी खजूरके दरख़्त से ज़ियादह ऊंचा है यहां लफ़्ज ज़ियादह का छिपा है ॥

अत्युक्ति बाचक वह है कि जिसमें गुणाधिक्य बहुतही ज़ियादह पाया जाय और उसके चिन्ह यह हैं बहुत-सब से ज़ियादह-निहायत

यथा:-बलदेव अपनी दफ़ा के विद्यार्थियों में बहुत या सब से ज़ियादह या निहायत ज़हीन है ॥

सर्बनाम(ज़मीर)

सर्बनामों का लिङ्ग बचन और बिभक्ति कार्य्य नामवत् है-लिङ्गभेद से कुछ फ़र्क़ नहीं होता नाम के अनुरोध से लिङ्ग जाना जाता है ॥

और उस्के पांच भेदहैं पुरुषबाचक (शख़्सी-या इस्मी) दर्शक (इशारह) सामान्य (मुबहम) सम्बन्धी (मौसूल) प्रश्नार्थक (इस्तिफ़हाम) जो किसी चीज या शख़्स के बदले आवे वह पुरुष बाचक सर्बनाम है-उसके तीन शब्द हैं- मैं अपने का बाचक अर्थात् बक्ता के लिये आता है। तू यह सन्मुखस्थ के लिये आता है अर्थात् प्रतिबादी को। वह उक्त दोनों को छोड़ कर तीसरे का बोध कराता है ॥

पुरुष	एक बचन	बहुबचन	
प्रथम	मैं	हम	
द्वितीय	तू	तुम	तू और तुमके स्थानपर आप होजाता है
तृतीय	वह	वे	

आप-यह सर्व नाम, मैं-तू-वह- इनके योग में आता है जैसे- मैं आप दौड़ा-तू-आप दौड़ा वह आप दौड़ा ॥

दर्शकसर्व नाम वह है जिस से किसी की तरफ़ इशारह किया जावे और वह येहैं- यह-वह-ये वे-जैसे-यह किताब-यहकितावें-वहक़लम-वे क़लमें-यह और ये पास की चीज़ के वास्ते आते हैं और वह-वे-दूर के पदार्थ के लिये-सामान्य सर्व नाम वह है जिसके कहने से किसी पदार्थ का निश्चित बोध न हो-जैसे-कई-कईएक-कोई-कुछ-कई हमेशा अनिश्चित संख्या के वास्ते आता है और उसके रूपसब कारकों में एक से होते हैं। कुछ मान के वास्ते आताहै-यथा-कुछ शक्कर लाओ-कोई सन्दिग्ध संख्या के वास्ते बोलाजाता है जैसे-कोई हाज़िर है ॥

सम्बन्धवाचक सर्व नाम वह है जिससे सम्बन्ध पाया जावे जैसे-जो-सो-जौन-तौन-जैसे-वह चीज़ जो कल खोगई थी सो आज मिल गई प्रश्नार्थक सर्व्व नाम वह है जो प्रश्न करने में काम दे जैसे-कौन आता है-क्या खाता है ॥

क्रिया पद बिचार(फ़ेल)

क्रिया पद में पांच अर्थ(सूरतें)होते हैं ॥

अर्थ (सूरत) उसको कहते हैं जोकिक्रिया अथवा व्यापार करने के विषय में बोलने वाले के मन में

भाव होवे तद्भाव बोधक जो क्रियापद का रूप है उसे अर्थ कहते हैं ॥

स्वार्थ (सूरत बयानिया) वह है जिससे केवल क्रिया पद का होना साबित हो या जिस में सवाल पूछा जावे जैसे—वह गया-तुम गये-मैंगई वहगई-वह लड़का क्या पढ़ता है-वह जावेगा॥

आज्ञार्थ(सूरत अमरिया) वह है जिससे हुक्म या दरख़ास्त पाई जावे जैसे-आ- आव- मतजा मतजाओ-दीजिये-मतदीजिये ॥

विध्यर्थ (सूरत अख़तियारिया) वह है कि जिसे मालूम हो कि क्रिया का करना या न करना कर्त्ता के आधीन है जैसे-मैं जाऊं-याजाय सकूं-हम जांय-या न जायसकें ॥

संकेतार्थ (सूरत शर्त्तिया) वह है जब एक क्रिया पद का सम्बन्ध दूसरे के साथ अगर जो अव्यय द्वारा वा किसी सहाय धातु के खण्ड के द्वारा ज़ाहिर हो यथा-अगर वह जाय तो मैं जाऊं-अगर तुम पढ़ो तो मैं पढ़ूं-अगर वह पढ़ने जाता तो फ़ाज़िल होता ॥

धात्वर्थ (सूरत मसदरिया) वह है कि जिसमें होना या करना किसी काम का पाया जाय जैसे लिखना-पढ़ना-आना-जाना-क़ुबूल करना-दिल लगाना-यह सब धातु कहलाते हैं और हिन्दीमें धातु का चिन्ह ना आता है और बाज़ जगह पर धातु से नाम वत् कार्य्य होता है जैसे- दिन का.

सोना सुस्ती लाता है कुल हैवानात के वास्ते खाना पीना ज़रूरी है ॥

काल बिचार (फ़ेल के ज़माने)

वह समय जब क्रिया हुई हो उसे काल कहते हैं। इसका बोध क्रिया के रूप से होता है ॥

मुख्य काल तीन हैं भूत (माज़ी) वर्त्तमान (हाल) भविष्य (इस्तक़बाल) ज़माना गुज़रे हुए को भूत काल कहते हैं जैसे-समझा ज़माना मौजूद हो को वर्तमान काल कहते हैं जैसे-समझता है ज़माना आने वाले को भविष्य काल कहते हैं जैसे-समझेगा ॥

अव्यय बिचार(हर्फ़ का बयान) ॥

अव्यय (हर्फ़) वह है कि जिसके माने बग़ैर मिलाने दूसरे शब्द के न समझे जावें जैसे-मैं-पर-से-तक-ओह-इन से बाक्य में रबत पैदा होता है इस लिये यौगिक और अर्थद मानवी भी कहते हैं—जब कहैं कि लखनऊ से मुरादा बाद तक सड़क आहनी जारी है तब इस तरकीब से से-के माने प्रारम्भ (शुरूअ) और-तक-के माने इन्तिहा के समझे जाते हैं-मगर बग़ैर मिलाने और शब्दों के-से-यातक-के माने कुछ समझ में नहीं आते ॥

अव्यय भेद (अक़साम हरूफ़)

अव्यय को बिभक्त्यादि कार्य नहीं होता इसलिये उसे अबिभक्तिक अथवा अव्यय कहते हैं-उनके चार भेद हैं ॥

क्रिया विशेषण (हर्फ़ सिफ़त शब्दयोगी) (हर्फ़ज़र)(उभयान्वयीहर्फ़ वस्ल) केवल प्रयोगी (हर्फ़ निदा) ॥

क्रिया विशेषण (हर्फ़ सिफ़त) वह लफ़्ज़ है ॥ जो फ़ेल या सिफ़त की या खुद अपनी ख़ासियत ज़ाहिर करै जैसे-गणेश खूब पढ़ता है- महेश बहुत बुरा लड़का है-बब्बू निहायत अच्छा लिखता है-इन बाक्यों में-खूब-बहुत-निहायत अच्छा-क्रिया बिशेषण हैं किस लिये कि-खूब पढ़ता है क्रिया की कैफ़ियत बयान करता है-और बहुत-बिशेषण "बुरा,,-की ख़ासियत बताता है और निहायत-क्रियाबिशेषण "अच्छा,,की ख़ासियत ज़ाहिर करता है और-अच्छा-यह क्रिया बिशेषण "लिखता है,,क्रिया की ख़ासियत बताहै

क़िस्मदोयम

शब्दयोगी अव्यय (हर्फ़ ज़र) ज़र का अर्थ खींचना है क्रिया के अर्थ को खींचकर नाम पर पहुंचाते हैं इसलिये यौगिक अव्यय (हरूफ़-ज़र) कहलाते हैं यथा-तुम घर तक जाओ-इस उदाहरण में-तक-शब्द योगी अव्यय है

क़िस्मसोयम

उभयान्वयीअव्यय (हर्फ़ वस्ल) लफ़्ज़ है जो शब्दों या बाक्यों या दोनों को मिलावे-जैसे-गुलाब और उजागर पढ़ते हैं-अगर तुम पढ़ोगे तो तुम्हारे हक़

में बेहतर होगा-इनबाक्योंमें और-अगर-तो-उभयान्वयी अव्ययहैं॥

क़िस्मचौथी

केवल प्रयोगी अव्यय (हर्फ़ निदा) मुतकल्लिम केजानिबसे मुख़ातिब को उसकी तरफ़ मुतवज्जह करने के लिये या मुख़ातिब के बोलाने या पुकारने के लिये मौज़ूअ़ हैं - सिवाय इस के उनसे दिलका कोई ख़ास जोश या अमर या ताज्जुब या अफ़सोस ज़ाहिर होताहै यथा अजी-अरे-होत-वाह-हाय- इत्यादि

उदाहरण ॥

प्र०१- शब्द विचार (सर्फ़ इल्म) किसको कहते हैं?

प्र०२- शब्द (लफ़्ज) से क्या मुराद है और उस के कै भेदहैं और कौन२हरएककी तारीफ़करो?

प्र०३- शब्द (लफ़्जमौज़ूअ़) के कैभेदहैं हरएक की तारीफ़ करो और उदाहरण दो?

प्र०४- शब्द (कलमा) किसको कहतेहैं?

प्र०५- शब्द (कलमा) के कै भेद हैं ?

प्र०६- संज्ञा (इस्म) क्याहै ?

प्र०७- विशेष नाम (इस्मख़ास) और सामान्य नाम (इस्मआ़म) किसको कहते हैं ?

प्र०८- विद्या (इल्म) किसको कहते हैं उसकी तारीफ़ करो और उदाहरण दो ?

प्र०९- लिङ्गभेद(बाअतबार तज़कीर बतानीस (इस्म) के कै भेद हैं?

प्र०१०- पुलिङ्ग (मुज़क्कर) किसको कहते हैं और स्त्री लिङ्ग (मुवन्नस) किस्को ?

प्र०११- पुलिङ्ग (मुज़क्कर) और स्त्री लिङ्ग (मुवन्नस) की क्या २ पहचान है ?

प्र०१२- संज्ञावाची संज्ञा (बलिहाज़ तादाद इस्म) के कै भेद हैं ?

प्र०१३- एकबचन (वाहिद) किस्को कहते हैं और बहुबचन (जमअ़) किस्को?

प्र०१४- बिशेषण (सिफ़त) से क्या मुराद है उसकी तारीफ़ करो और उदाहरणदो और उसके कैदर्जे हैं और कौन कौन आधिक्या बाचक (तफ़ज़ीलबाज़) से क्यामुराद है और अत्युक्ति बाचक (तफ़ज़ीलकुल) से क्या- हरएक की मिसाल देकर समझाओ ?

प्र०१५- सर्बनाम (ज़मीर) किस्को कहते हैं और उस्के कै भेदहैं हरएककी तारीफ़ करो और उदाहरण दो?

प्र०१६- क्रियापद (फ़ेल) की क्या तारीफ़ है और उस्की कै सूरतें हैं और कौन २ हर एककी तारीफ़ करो और उदाहरणदो ?

प्र० १७-क्रिया(फ़ेल)के कै काल हैं और कौन२ मये उदाहरण बर्णन करो ?

प्र० १८-अब्यय(हर्फ़) किस्को कहते हैं ?

प्र० १९-यौगिक(हरूफ़रबत)और अर्थद(हरूफ़ मानवी) के क्या माने हैं ?

प्र० २०-क्रिया बिशेषण (हर्फसिफ़त) किस्को कहते हैं मये उदाहरण के बर्णनकरो?

प्र० २१-बिशेषण (सिफत) और क्रिया बिशेषण (हर्फसिफत) में क्या अन्तर है ?

प्र० २२-शब्द योगी अब्यय (हर्फजर) से क्या मुराद है ?

प्र० २३-उभयान्वयी अब्यय(हर्फवस्ल)किस को कहते हैं?

प्र० २४-केवल प्रयोगी अब्यय (हर्फनिदा) की तारीफ़ करो और मिसालैंदो ?

बाक्य(नहो) के बयान में

बाक्य रचना(नहो)वह इल्महै कि जिससेबाक्य का बनाना शब्दों के मिलाने से आजावे और मालूम होजावे कि तरकीब में फ़लांफ़लां कर्ता वाक़ै और फलां कर्म इत्यादि ग़रज़ उससे सेहत कलाम है कि जिससे माने ठीकसमझे जावें॥

मुरक्कब

मुरक्कब वहहैजो दो कलमों या ज्यादह सेबना है उस्की दो क़िस्में हैं एक बाक्य वा पूर्ण बाक्य (मुरक्कबमुफ़ीद) दूसरे असम्पूर्ण बाक्य (मुरक्कब ग़ैरमुफ़ीद) ॥

बाक्यवापूर्ण बाक्य (मुरक्कबमुफ़ीद) वह है कि जिसके सुनने से कुछ इन्तिज़ार बाक़ी नर है

और मालूम होजावे कि मुतकल्लिम किसी चीज़ की ख़बर देता है या खुद ख़ाहिश रखता है और उसी को जुमला और कलाम और मुरक्कब नाम भी कहते हैं जैसे-लल्ल ने लक्ष्मण कोमारा मदन आलिम है-इधर आ-अव्वल दो जुम्लों के सुनने से सुनने वाले को मालूम हुआ कि कहने वाला ख़बर देता है और तीसरे जुम्ले से साबित हुआ कि वह ख़ाहिश रखता है ॥

असम्पूर्ण वाक्य (मुरक्कब ग़ैरमुफ़ीद) वह है कि जिसके सुनने से इन्तिज़ार रफ़अ न हो और सुनने वाला दूसरी बात सुनने का मुन्तज़िर रहे जैसे—माधव की किताब—इसके सुनने से सुनने वाले को पूर्ण अर्थ नहीं समझा जाता किताब की बाबत जो चीज की गई या जिस अवस्था में वह हो उसका ज़िकर नहीं हुआ ॥

अपूर्ण वाक्य (मुरक्कब ग़ैरमुफ़ीद) की चार क़िस्में हैं गुणवाची१ (मुरक्कब तौसीफ़ी) सम्बन्ध वाची२ (मुरक्कब इज़ाफ़ी) और तत्पुरुषसामासिक३ (मुरक्कब इन्तिज़ाजी) संख्यावाची४ (मुरक्क बग़ैर इन्तिज़ाजी) ॥

गुणवाची अपूर्णवाक्य (मुरक्कब तौसीफ़ी वह है जिसमें एक शब्द विशेषण हो और दूसरा विशेष्य॥

जिस शब्द से किसी का गुण ज़ाहिर किया जाय वह विशेषण (सिफ़त) और जिसका गुण ज़ाहिर करे वह विशेष्य (मौसूफ़) कहलाता है

जैसे—तेज़ घोड़ा इस्में तेज़ विशेषण और घोड़ा विशेष्य है ॥

संबन्ध वाची अपूर्ण वाक्य (मुरक्कब इज़ाफ़ी) वह है जिस्में एक संज्ञा का सम्बन्ध दूसरे के साथ किया जावे-जिसे निस्बत करते हैं अर्थात् जिस पर दूसरे शब्द का सम्बन्ध है वह सम्बन्धी (मुज़ाफ़) कहलाता है और जिस्का सम्बन्ध रहता है उसे कृत सम्बन्धी (मुज़ाफ़ अहल) कहते हैं-जैसे-लल्ल का घोड़ा इस्में लल्ल कृत संबन्धी और घोड़ा संबन्धी है-तत्पुरुष सामासिक अपूर्ण वाक्य (मुरक्कब इज़्ति-ज़ाज़ी) वह है जो दो शब्दों में मिलकर किसी वस्तु का नाम होजाय इस्में पूर्व पद की विभक्ति का लोप कर दिया जाता है और तब उसकी योजना उत्तर पद के साथ होती है और दोनों शब्दों में उत्तर पद प्रायः प्रधान होता है-जैसे-अकबराबाद अर्थात् अकबर से आबाद किया हुआ शहर का नाम होगया संख्या वाची अपूर्ण वाक्य (मुरक्कब ग़ैर इज़्तिज़ाज़ी) वह है जो दो शब्दों से मिलकर बने और कोई संबन्ध बोधक शब्द का उनके मध्य में लोप हो जैसे अदद ११ एक और दश से मुरक्कब है २५—बीस और पांच से—और एकहज़ार दो हज़ार वग़ैरह हज़ार कहलाते हैं उक्त उदाहरणों की नांई सैकड़े और हज़ार भी मुरक्कब हो सक्ते हैं जैसे—१५ सौ १८ सौ २५ हज़ार इत्यादि —संख्या गिनती को कहते हैं जिस वस्तु को गिने उसे गण्य कहते हैं

जैसे-२५ हाथी यहां २५ संख्या बाक़ी असम्पूर्ण वाक्य के और हाथी गण्य हैं ॥

पूर्ण वाक्य (तक़सीम मुरक्कब मुफ़ीदयाजुम्ला)

पूर्ण वाक्य दो प्रकार का होता है कथनात्मक (जुम्ला ख़बरिया) और इच्छा प्रबोधक (जुम्लाइंशाइया) ॥

फ़ायदह

वाज़ेह हो कि कोई जुम्ला बिदून ऐसे फ़ेल के कि उसे ज़माना पाया जावे नहीं होता है और फ़ेल उमूमन् काम को कहते हैं और कोई काम बग़ैर फ़ायल यानी-काम करने वाले के पाया नहीं जाता इसलिये हर फ़ेल के वास्ते फ़ायल का होना बहुत ज़रूर है ॥

फ़ायल-वह है जिससे फ़ेल क़ायम या सादिर हो ॥

मफ़ऊल-वह है जिस पर फ़ेल क़ायम या सादिर हो-मस्लन्-ज़ैद सबक़पढ़ता है-यहांज़ैद फ़ायल सबक़ मफ़ऊल और पढ़ताहै-फ़ेल है ॥

अकर्मक क्रिया(फ़ेललाज़मी)

जिसफ़ेल में सिर्फ़ फ़ायलसे बातपूरी होजावे उसको फ़ेल लाज़मी कहते हैं जैसे ज़ैद आया यहांज़ैदफ़ायलऔरआयाफ़ेल लाज़मीहै सकर्मक क्रिया(फ़ेलमुतअद्दी) जोफ़ेलऔरफ़ायलके मिलने सेपूराजुमला न होवे और ख़ाहिश मफ़ऊल की बाक़ी रहे तोउसको फ़ेल मुतअद्दीकहतेहैं जैसे

लक्ष्मण ने हलवा खाया कल्लू रहीम बख़्श को मारता है पहली मिसाल में लक्ष्मण फ़ायल -ने अलामत फ़ायल- हलवा मफ़ऊल- और खाया फ़ेल मुतअद्दी है ॥

दूसरी मिसाल में कल्लू फ़ायल रहीम बख़्श मफ़ऊल को अलामत मफ़ऊल और मारता है फ़ेल मुतअद्दी है-को-के-तईं-ए-अलामतें मफ़ऊल की हैं जैसे-कल्लू उसको-उसके तईं या उसे मारता है ॥

कर्म प्रधान (मजहूल)

फ़ेल मजहूल वह है कि जिसका फ़ायल मालूम न हो बल्कि तरकीब में मफ़ऊल फ़ायल की जगह मुस्तैमिल हो जैसे ज़ैद मारा गया इस तरकीब में ज़ैद फ़ायल और मारा गया फ़ेल मजहूल है हालां कि दरअसल ज़ैद मफ़ऊल है ॥

कथनात्मक (जुम्लाख़बरिया)

जुम्ला ख़बरिया वह है कि जिसके सुनने से सामा को मालूम हो कि कहने वाला कुछ ख़बर देता है और उसके कहने वाले को झूठा या सच्चा ठहरा सकें-जैसे लक्ष्मण सुबह दीहै -कल्लू ने खाना खाया-मैंने अपना घोड़ा उसके हाथ बेचा-जुम्लाख़बरिया की पांच क़िस्में हैं-

कर्त्तात्मक (जुम्ला लाज़मिया)

अर्थात्मक (जुम्ला बया नय)

कर्म्मात्मक (जुम्ला मुतअद्दिया)

कर्मप्रधानवाक्य (जुम्ला मजहूलिया)

संकेतबोधकवाक्य(जुम्लाशर्त्तिया)

कर्त्तात्मक(जुम्लालाज़मिया)

जम्लालाज़मिया वह है कि फ़ायल और फ़ेललाज़मीसे मुस्तैमिल हो जैसेज़ैद आया—ज़ैदफ़ायल आयाफ़ेल लाज़मिया केसाथ मिलकर जुम्ला ख़बरिया लाज़मिया हुआ॥

अर्थात्मक(जुम्लाबयानिया)

जुम्ला बयानिया वहहै कि फ़ेललाज़मी और दोफ़ायलोंसे मुस्तमिल हो और इन दोनों में एक फ़ायलदूसरे फ़ायल काबयान वाक़ै हो जैसे ज़ैद दानाहै-इसमिसालमें ज़ैदफ़ायलहै और दाना भी फ़ायल-लेकिन्दाना ज़ैदकाबयान वाक़ै हुआहै और है फ़ेललाज़मी-पसफ़ायल ज़ैद, फ़ायल बयानी दाना, केसाथमिलकर जुम्ला ख़बरिया बयानियाहुआ-इसीतरह और मिसालोंमेंभी समझो जैसे-कल्लमेरा भाई आया—उमर मालूम होताहै॥

कर्म्मात्मक(जुम्लामुतअद्दिया)

जुम्ला मुतअद्दिया वहहै कि फ़ायल और फ़ेल मुतअद्दी और मफ़ऊलसे बनाहो जैसे-ज़ैदने खाना खाया-ज़ैद फ़ायलने अलामत फ़ायल खाना मफ़ऊल-खाया-फ़ेलमुतअद्दी केसाथमिलकर जुम्लाख़बरिया मुतअद्दियाहुआ॥

कर्म्मप्रधानबाक्य(जुम्लामजहूलिया)

जुम्ला मजहूलिया वह है जो फ़ायल और फ़ेल

मजहूल से बनाहो-जैसे-ज़ैदमारा जाता है -ज़ैद फ़ायल अपने फ़ेल मारा जाताहै-से मिलकर जुम्ला ख़बरिया मजहूलियाहुआ ॥

संकेत बोधक बाक्य (जुम्ला शर्तिया)

जुम्ला शर्तिया वहहै कि जिसमें माने शर्त और जज़ाके पाये जावें जैसे अगर तुम आओगे तो मैं जाऊंगा -अगर तुमआओगे -शर्त्त और मैंजाऊंगा -जज़ा-शर्त्त साथ जज़ा के मिलकर जुम्ला ख़बरिया शर्त्तिया हुआ ॥

इच्छाप्रबोधक (इन्शाइया)

जम्ला इन्शाइया वहहै कि जिसके सुनने से सुनने वाले को मालूमहो किकहने वाला कुछ ख़ाहिश या तलब रखता है और उसको झूठा या सच्चा नकहसकें -जैसे- ख़तलिख- मतमार आपकहांगयेथे-जुम्लाइन्शाइयाकी तीनकिस्में हैं-आज्ञार्थक बाक्य (अमर) निषेध बोधक बाक्य (निही) और प्रश्नार्थक बाक्य (इस्तिफ़हाम)

आज्ञार्थक बाक्य(अमर)

अमर वह है कि जिसके सुननेसे कहने वालेकी कोई दरख़ास्त पाईजावे जैसे-सबक़पढ़- पस्यह जुम्ला इन्शाइया अमरिया हुआ ॥

निषेधबोधक बाक्य(निही)

निही वहहै कि जिसके सुनने वाले को किसी

अमर की मुमानत पाई जावे जैसे-मतजा – पस यह जुम्ला इन्शाइया इम्तनाइयाहै ॥

प्रश्नार्थक बाक्य (इस्तिफ़हाम)

इस्तिफ़हाम वहहै कि जिस्के सुनने से सुनने वाले को मालूम हो कि कहने वाला कोई सवाल करता है जैसे –तुम क्या खाते हो पस यह जुम्ला इन्शाइया इस्तिफ़हामिया हुआ ॥

बाक्य (नहो)

प्र०१- बाक्य रचना (इल्मनहो) किस्को कहते हैं और उसके सीखनेसे क्या ग़रज़ है ?

प्र०२- (मुरक्कब)सेक्या मुराद है और उसकी कै क़िस्में हैं ?

प्र०३- बाक्य वा पूर्ण बाक्य(मुरक्कबमुफ़ीद)किस्को कहतेहैं उसकी तारीफ़ करो और मिसाल दो और बताओ कि उसके औरक्या २ नामहैं ?

प्र०४- असम्पूर्ण बाक्य(मुरक्कबग़ैर मुफ़ीद) क्याहै उस की तारीफ़ करो औरमिसालदेकर समझाओ ?

प्र०५- असम्पूर्ण बाक्य(मुरक्कब ग़ैरमुफ़ीद) कीकै क़िस्में हैं और कौन २

प्र०६- गुणबाची(मुरक्कबतौसीफ़ी)और सम्बन्ध बाची (मुरक्कबइज़ाफ़ी) कीतारीफ़ करो और हर एककी मिसालदो और उस्के कुल अजज़ाबताओ ?

प्र०७-तत्पुरुष सामासिक (मुरक्कबइज़ाफ़ी) किस्को कहते हैं और संख्याबाची (मरक्कबग़ैरइज़ाफ़ी) किस को-हर एक की तारीफ़ करो और मिसाल दो ?

प्र०८-संख्याबाची अपूर्ण बाक्य (मुरक्कबातताद्दादी) की कै क़िस्में हैं औरकौन २ औरकौन२ से चार अक़्सामके मुरक्कबात में दाख़िलहैं ?

प्र०९-बयालीसऔरतीनसौदोनों मुरक्कबातताद्दादीहैं पस अव्वल कौन से चार अक़्सामके मुरक्कबातमें दाख़िलहैं और दूसराकिसमें?

प्र०१०-बाक्य (जुम्ला) की कै क़िस्मेहैं ?

प्र०११-क्रिया (फ़ेल) किस्को कहते हैं कर्त्ता (फ़ायल) किस्को और कर्म्म (मफ़ऊल) किस्को- ?

प्र०१२-अकर्मक क्रिया(फ़ेललाज़िमी) से क्यामुराद है मिसाल देकर समझाओ?

प्र०१३-सकर्मक क्रिया (फ़ेलमुतअद्दी) किस्को कहतेहैं तारीफ़ करो और मिसालदो?

प्र०१४-कर्त्ता (फ़ायल)और कर्म्म(मफ़ऊल) की उर्दू मे क्याक्याअलामतेहैं ?

प्र०१५-कर्म प्रधान (फ़ेलमजहूल) की तारीफ़ करो और मिसालदो ?

प्र०१६-कथनात्मक (जुम्लाख़बरिया) किस्को कहतेहैं उसकीतारीफ़मये चन्द मिसालों केबयान करो ?

प्र०१७-इच्छा प्रबोधक (जुम्ला इन्शाइया) की तारीफ़ मये चन्दमिसालों के बयान करो?

प्र०१८-कथनात्मक (जुम्लाख़बरिया) कै अक़्सा मपर मुनक़सिम है हरएकका नाम लो और तारीफ़ करके मिसाल दो?

प्र०१९-इच्छा प्रबोधक (जुम्ला इन्शाइया) की कै क़िस्में हैं हर एक का नाम लो और उस की तारीफ़ करके मिसाल दो?

प्र०२०- जैद होशियार है इस की तरकीब करो

प्र०२१- कल्लू ने मेरे कुत्ते को मार डाला इस्की तरकीब बयान करो?

प्र०२२- वह रोज़ मारा जाता है इस्की तरकीब करो?

प्र०२३-लक्ष्मण आया-इस्की तरकीब करो?

प्र०२४-मैं बेशक आऊंगा अगर उस्से छुट्टी होगी-इस्की तरकीब करो?

प्र०२५-तुम उसे लेकर यहां आओ इसकी तरकीब करो?

प्र०२६हरगिज़ तुम वहां न जाओ इस की तरकीब करो?

प्र०२७-क्या अभीतक तुम वहां मौजूद थे-इस की तरकीब करो?

इति